हुसर्ल - प्रकृतिवाद की आलोचना

प्रकृतिवाद भौतिक वस्तुओं के अस्तित्व में विश्वास रखता है। हुसर्ल के अनुसार यह एक सामान्य दृष्टि है जिसे प्रायः सभी मनुष्यों की दृष्टि कह सकते हैं। प्रकृतिवाद तथ्यात्मक जगत में विश्वास रखता है, जहां भौतिक वस्तुएं हैं, जिसमें व्यक्ति हैं और इन दोनों के बीच क्रिया प्रतिक्रिया होती है। प्रकृतिवाद अपने विश्वास के आधार पर ही जगत की व्याख्या करता है और अपनी व्याख्या को वस्तुनिष्ठ मानता मानता है। हुसर्ल मानते हैं कि विश्वास के सहारे की गई व्याख्या वस्तुनिष्ठ व्याख्या वस्तुनिष्ठ व्याख्या नहीं हो सकती। वह प्रकृतिवाद का खंडन करते हैं। हुसर्ल प्रकृतिवाद का खंडन दो कारणों से करते हैं एक तो इस कारण कि एक रूप में प्रकृतिवादी विचार फेनोमेनोलॉजी का प्रतिद्वंद्वी सिद्धांत प्रतीत होता है। दूसरा कारण यह है कि वस्तुनिष्ठता का आधार 'प्रदत्तता' में है वस्तुनिष्ठता को मान्यता के रूप में स्वीकार कर लेने में नहीं।हुसर्ल प्रकृति वाद की आलोचना निम्न रूप से करते हैं।:-

1.प्रकृतिवाद अनुभव को महत्व देता है। उसके अनुसार जो अनुभव में आए वही सच है है। हुसर्ल प्रकृतिवाद के इस प्रवृत्ति को स्वीकार करते हैं ।परंतु उनका मानना है कि प्रकृतिवाद प्रदत के स्वरूप के संबंध में एक भ्रांति पूर्ण पूर्ण धारणा को आधार बना अपनी व्याख्या प्रस्तुत करता है है। प्रकृतिवाद की भ्रांति यही है कि वह पहले से यह मानकर चलता है कि अनुभव में प्राप्त भौतिक वस्तु है। हुसर्ल के अनुसार जगत की व्याख्या चेतना और चेतना के विषयापेक्षा सिद्धांत के आधार पर की जानी चाहिए

परंतु प्रकृतिवाद इस चेतना की अवहेलना करता है।

2. प्रकृतिवाद अनुभव जगत की वस्तु को सत्य तथा अन्य को को कल्पना तथा अयथार्थ मान लेता है ऐसा करने से हमारे ज्ञान का विस्तृत क्षेत्र समाप्त हो जाएगा और केवल अनुभव में आने वाले वस्तु जगत तक ही हमारा ज्ञान रह ही हमारा ज्ञान रह जाएगा। जबकि मानव विज्ञान का क्षेत्र असीम

है।हुसर्ल का कहना है कि प्रकृतिवाद भौतिक जगत को सत् मानता तो है परंतु इसे प्रमाणित करने के लिए उसके पास कोई प्रमाण नहीं है क्योंकि विश्लेषण से तो यही पता चलता है कि पता चलता है कि भौतिक वस्तु को सत् कहना उसकी एक पूर्व मान्यता है।

3. हुसर्ल के अनुसार प्रकृतिवाद की वस्तुनिष्ठता का दावा निराधार है क्योंकि प्रकृतिवाद भौतिक तत्व को पूर्व मान्यता के रूप में स्वीकार करता है। यदि विश्लेषण से यह दिखाया जाए कि जाए कि भौतिक वस्तु सत् नहीं है बल्कि एक प्रकार की संरचना है तो प्रकृतिवाद के पास अपने दावे को सिद्ध करने का कोई साक्ष्य नहीं रह जाता है।

4. प्रकृतिवाद की यह मान्यता है कि चेतना, संज्ञान आदि मानसिक क्रियाओं- व्यापारों की प्रकृतिवादी व्याख्या हो सकती है। हुसर्ल इसका खंडन करते हुए कहते हैं कि इस प्रकार का प्रयत्न एक दृष्टि से 'मानसिक' के भौतिकीकरण का प्रयत्न है का प्रयत्न है। हुसर्ल के अनुसार ऐसा प्रयत्न आत्मघाती है क्योंकि 'चेतना या 'मानस' की प्रकृतिवादी व्याख्या के लिए चेतना' और अनुभूति का ही सहारा लेना पड़ता है। इस प्रकार जिसकी व्याख्या करनी है, जिसका भौतिकी करण करना है उसे उस भौतिकी करण के लिए भी उसी रूप में स्वीकार करना पड़ता है। 5. हुसर्ल प्रकृतिवाद की आलोचना करते हुए कहते हैं कि इसने दार्शनिक चिंतन को पथभ्रष्ट कर दिया है। हुसर्ल का विचार है की 'भ्रांत प्रकृतिवाद' के कारण ही आधुनिक विज्ञान 'सत्य और 'प्रामाणिकता' की समस्याओं को हल नहीं कर सका है, इसमें वह असफल ही नहीं रहा वरन् इसके विषय में गलत धारणाओं का प्रचार भी किया है। तथा साथी दार्शनिक चिंतन को पथभ्रष्ट भी किया है।

इस प्रकार हुसर्ल प्रकृतिवाद की आलोचना करते हैं।